तालाब और बेरियां टिकाऊ जल संसाधन रहे हैं अखाधना गांव के लिए

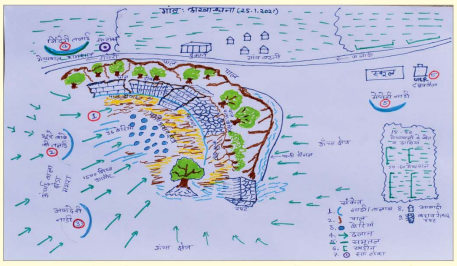

अखाधना की सुंदेरी नाडी का सूखा तल देख कर लगता है कि नाडी में पानी नहीं है। गांव के लोग बताते हैं कि पांच साल लगातार बरसात नहीं हो, तब भी नाडी के भू-गर्भ में पीने का पानी मिलता है यहां की बेरियों में। यह सातवीं या आठवीं पीढ़ी है जो इन संसाधनों का उपयोग कर रही है।

सुंदेरी नाडी मुख्य तालाब है। बहुत बड़ा ढलान वाला आगौर है। पाल और आड बनाई गई है। पहले गांव के लोग पालर और रेजाड़ी दो प्रकार के पानी का स्वाद लेते थे। अब ट्यूबवैल होने पर वाकल और नहर के पानी का भी स्वाद लेते हैं।

सुदेंरी तलाब में सात से आठ महीने पानी मिलता है। उसके बाद बेरियों के पानी का उपयोग करते थे। आगौर में मेघेरी नाडी, अणदे री नाडी, जिंदेरी नाडी, भूरे बाबा की नाडी ये चार और नाडियां हैं जिनमें 4-5 महिनों तक पानी रूकता है और पशु पीते हैं। इन नाडियों की देखभाल आस-पास रहने वाले समुदाय करते हैं।

नहर से पेयजल सप्लाई शुरू होने के बाद नाडी व बेरियों को संकट के समय के लिए सुरक्षित रखा गया है तथा उनका प्रबंधन उपयोग करने वाले समुदाय करते हैं।

तालाब का पानी सोलर कंपनी वाले टेंकर भर कर ले जाते हैं, लेकिन बेरियों में सुरक्षित पानी संकट के समय गांव के लोग उपयोग करते हैं। गांव के कुछ प्रभावशाली लोगों के पास टेंकर हैं, जो सोलर कंपनी को पानी बेचते हैं, उनको कोई रोकता नहीं है। इस कारण से सुंदेरी नाडी में पहले होली तक पानी रहता था, अब 3-4 महीनों में खत्म हो जाता है।

टेंकर वाले नहर की सप्लाई वाली होदी से भी टेंकर भर कर ले जाते हैं। प्रभावशाली होने के कारण उनको कोई नहीं रोकता।

सुंदेरी सहित सभी नाडियों में आगौर में गंदगी, तालाब में स्नान, हरे वृक्षों की कटाई, आगौर से मिट्टी ले जाने की मनाही है। गांव के लोग ध्यान रखते हैं तथा नियमों का पालन करते हैं।

दो साल पहले घर दीठ हजार रू. का चंदा कर सुंदेरी नाडी से जेसीबी व ट्रेक्टरों से खुदाई करवाई थी। जरूरत पड़ने पर गांव के कुछ लोग नाडी में काम कराने का निर्णय करते हैं। सरकारी योजना नहीं होती है, तो जनसहयोग से काम कराते हैं।

सुदेंरी नाडी का आगौर राजस्व रिकॉर्ड में सैटलमेंट के दौरान श्रीसरकार के नाम से दर्ज हो गया जिसका अर्थ यह सरकारी भूमि है।

सरकार ने यह जमीन सोलर कंपनी को देने का निर्णय लिया, तब गांव के लोगों ने नेताओं व अफसरों को बताया कि यह जलस्रोत का आगौर है, इसे आवंटित नहीं करें। आवंटन तो रद्द हो गया, लेकिन रिकॉर्ड में दर्ज कराने की कार्यवाही करनी है।

संकटमोचन है अखाधना की बेरियां

बेरियां एक खास प्रकार के भूगर्भीय संरचना वाले क्षेत्र में बनती है। लोगों ने बताया कि पहले नाडी में पानी समाप्त होने पर आगौर में चार-पांच फुट गहरा गड्डा खोदते थे, जिसमें रोज चार-पांच मटके पानी मिलता था। बुजुर्गों को ज्ञान हुआ कि नीचे की बनवट पानी को नीचे नहीं जाने देती। उसके बाद बेरियां बनाने लगे। इनकी गहराई 30 से 35 फुट रखते हैं। नीचे कठोर परत आती है, उसके बाद खुदाई बंद कर देते हैं। एक बेरी से प्रतिदिन 400 से 500 लीटर पानी मिल जाता है। पांच साल लगातार बरसात नहीं हो, फिर भी बेरियों से बूंद-बूंद रिस कर एकत्रित होने वाला पीने लायक पानी मिलता रहता है। उपयोगिता बनाए रखने के लिए हर साल सफाई करनी पड़ती है, मिट्टी निकालनी पड़ती है।

तालाब का आगौर 1500 बीघा है जिसकी ढलान समाप्त होते ही तालाब बनाया गया है। तालाब के तल में तीस-पैंतीस साल पहले तक सौ से अधिक बेरियां थी, 36 बेरियां अब भी दिखती है, बाकी मिट्टी से भर गई। पहले प्रत्येक परिवार की एक बेरी होती थी, अब समुदाय वार बेरियां बनी हुई हैं। केवल पेयजल संकट के समय उपयोग करते हैं।

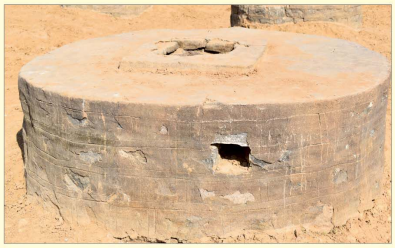

मुंह संकरा रखते हैं जिससे वाष्पीकरण कम हो। पहले ऊपर से कच्ची होती थी, 36 बेरियों का ग्राविस ने फाउंडेशन बनाकर पक्का करवा दिया। बेरी के फाउंडेशन पर जूता लेकर चढ़ना मना है। गांव के बजुर्ग आज भी बेरियों का पानी पीना पसंद करते हैं।

EUROPEAN UNION
Financial Support

ग्राविस

FES
FOUNDATION FOR ECOLOGICAL SECURITY

उन्नति
UNNATI